वार्तालाप नं. 534, निलंगा (महाराष्ट्र), ताः 13.3.08
Disc.CD No.534, dated 13.3.08 at Nilanga (Maharashtra)

जिज्ञासू– अनेक जन्मों का विचार–सागर–मंथन होगा तो अनेक जन्मों की कहानी जान सकते हैं।
बाबा – विचार–सागर–मंथन होगा तो तब ही, जबकि सर्विस का बैलेंस होगा। सर्विसेबुल बनेंगे तो विचार–सागर–मंथन चलेगा। और जो जितना जास्ती सर्विसेबुल बनेंगे, सर्विस का बैलेंस जिनका ज्यादा से ज्यादा इकट्ठा होगा, तो उनका विचार–सागर–मंथन भी जास्ती चलेगा।
Student: If we think and churn about many births we can know the story of many births.
Baba: Thinking and churning will take place only when there is a (bank) balance of service. If we become serviceable, the thinking and churning will take place. And the more someone becomes serviceable, the more the balance of service of someone accumulates, the more he/she can think and churn.

जिज्ञासू – उस जन्म की घटनायें अनुभव होगी।
बाबा – उस जन्म की छोड़ो। यहाँ तो यहीं शूटिंग पीरियड में यहीं।
मंथन चलता रहेगा। शूटिंग पीरियड देखते जावेंगे, टैली करते जावेंगे। शूटिंग पीरियड में ही सबकुछ देखने में आवेगा। बुद्धि चलेगी कि हमने ऐसे–ऐसे कर्म किए हैं, इसलिए ये रिजल्ट आ रहा है। ब्रॉड ड्रामा में होता तो वही है जो यहाँ शूटिंग पीरियड में हो रहा है। यहाँ सूक्ष्म रूप में होता है वहाँ ब्रॉड रूप में होता है, स्थूल रूप में होता है। अपने जन्मों की कर्म कहानी का साक्षात्कार सिर्फ अपने को ही नहीं होगा। जो और भी संगी–साथी हैं, पुरूषार्थी हैं, वो भी समझेंगे कि इनका पुरूषार्थ कैसा है। जैसे क्लास में स्टुडेन्टस् होते हैं। समझते तो हैं कि ये तीखा है, ये डल है। पता लग जाता है।
Student: Will we experience the incidents of that birth?
Baba: Leave about that birth, here the churning will keep taking place in the shooting period itself. You will go on seeing the shooting period and you will go on tallying it. Everything will be visible in the shooting period itself. The intellect will work, we have performed such actions; this is why this result is emerging. Whatever is happening here in the shooting period; only that takes place in the broad drama. Whatever takes place here in a subtle form takes place there in a broad form, in the physical form. We alone will not have the visions of the story of actions of our births but the other companions, the *purusharthis* (makers of special effort for the soul) will also understand, how is his/her purusharth (special effort for the soul) . For example, there are students in a class. They do understand (amongst each other), this one is sharp, this one is dull. They come to know.

समय–01.31
जिज्ञासू– बाबा, बाप के बच्चे तीन प्रकार के, प्रजा भी है, भक्त भी है और वारिसदार भी है। तो उनकी निशानी अभी कैसे पहचानेंगे?
बाबा – जो वारिसदार होंगे वो तो राजा बननेवाली क्वालिटी के होंगे ना। तो जो राजा बनेंगे उनकी चलन भी रायल्टी की होगी या ऐसी साधारण चलन होगी? स्पेशल उसकी चाल ही देखने में आ जावेगी। सर्विसेबुल होंगे या न सर्विस करने वाले होंगे? जब राजा बनेंगे तो प्रजा तो बनाई होगी। ढेर की ढेर प्रजा, लाखों की प्रजा होती है तब कहीं राजा होता है। एक राजा होता है उसके नीचे लाखों की तादाद में प्रजा होती है। तो इतनी लाखों आत्माओं को संदेश भी तो दिया होगा। लाखों आत्माओं की नजरों में वो चढ़े हुए भी तो होंगे कि देखो इन्होंने हमको कितना श्रेष्ठ रास्ता बताया।

Time: 01.31
Student: Baba, there are three kinds of children of the Father; there are subjects as well as devotees and heirs too. So, how can we recognize their indications now?
Baba: The heirs will have the quality of becoming a king, won't they? So, will those who become kings have a royal manners or an ordinary behaviour? Their very activity will be seen to be special. Will they be serviceable or will they be the ones who don't do service? When they are the ones to become kings, they would certainly have prepared subjects. There are numerous subjects, when there are hundred thousands of subjects, only then someone becomes a king. One king has hundred thousands (lakhs) subjects under him. So, he must have certainly given message to these many lakhs of souls. They must be indeed holding a high position in the eyes of lakhs of souls too (who think), look, he has shown such a righteous path to us.

ये तो राजाओं की क्वालिटी हो गई। फिर प्रजा वर्ग की। प्रजा वर्ग वाले क्या करेंगे? पवित्रता का पुरूषार्थ करेंगे? यहाँ जो ब्राह्मण जीवन में है वो मुख्य पुरूषार्थ क्या है? घर–गृहस्थ में रहते पवित्र रहने का पुरूषार्थी जीवन हो। तो जो` संदेश तो ले लेते हैं; लेकिन पवित्र रहने का पुरूषार्थ नहीं करते हैं। जब पवित्र रहने का पुरूषार्थ ही नहीं करते तो रेग्युलर क्लास भी, परमात्मा बाप की पढ़ाई भी नहीं पढ़ते। फिर ईश्वरीय सेवा की तो बात ही नहीं। तो वो प्रजा में चले जाते हैं।
This is the quality of the kings. Next is about the subjects' category. What will those who belong to the subjects' category do? Will they do the *purusharth* for purity? Here, for those in the Brahmin life, what is the main *purusharth* for them? We should endeavour to lead a *purusharthi* life of being pure while living in a household. So, those who do take this message, but they do not do the *purusharth* to remain pure; when they do not do the *purusharth* to remain pure at all, they do not attend the class regularly, they don't study the knowledge given by the Supreme Soul Father either. Then there is no question of (their) doing service of God at all. So, they are included in the subjects (category).

और फिर ऐसे भी हैं। क्लास भी करके दिखाते हैं। लोग समझते हैं ये बड़े सर्विसेबुल हैं। लेकिन बाप की नजरें समझती हैं ये सर्विस नहीं कर रहे हैं, क्या कर रहे हैं? और ही डिस–सर्विस कर रहे हैं। माना दिखावटी ज्यादा है। पब्लिक को रिझाए लेते हैं। लेकिन बाप को तो रिझाए नहीं सकता कोई। तो वो भक्त बनते हैं। भक्तों में दिखावा ज्यादा होता है। सुनना और सुनाना जास्ती होता है। पोम्प एन्ड शो ज्यादा होता है। ऐसे फिर और–2 धर्मों में कनवर्ट होने वाले भक्त बन जाते हैं।
And there are also some such souls, who also attend the classes, people think, they are very serviceable. But the eyes of the Father recognizes that they are not doing service; what are they doing? They are doing even more disservice. It means that they show off more (*dikhaavati*). They please the public. But such ones cannot please the Father indeed. So, they become devotees. The tendency to show-off is more among the devotees. They listen and narrate more. There is more pomp and show. Then, such ones become devotees who convert to the other religions.

4.49
जिज्ञासू– बाबा, जो शिव उपासक है; लेकिन वो ज्ञान में नहीं चलते तो उनका क्या पार्ट होगा?
बाबा – आगे चलके ज्ञान में चलने लग पड़ेंगे। लिंगायत सम्प्रदाय वाले हैं, अभी ज्ञान में नहीं चल रहे हैं। लेकिन जब हम बीजरूप आत्मायें जो असली लिंग स्वरूप धारण करने वाले हैं, शालिग्राम हैं; जब हम अपनी स्थिति में स्थित हो जावेंगे। तो उनकी बुद्धि में जल्दी समझ में

आ जावेगा। अगर चैतन्य चित्र सामने हो तो समझने वाले को जल्दी समझ में आएगा या जड़ चित्रों से समझ में आएगा? चैतन्य चित्रों से जल्दी समझ में आएगा। तो कमी क्या है? कमी है कि जो लिंगायत सम्प्रदाय के, शैव सम्प्रदाय के जो असली हैं मणके, वो तैयार हो जाऐं।
Time: 4.49
Student: Baba, those who are the devotees of Shiv, but if they do not follow the knowledge, what will be their part?
Baba: In future, they will start following the knowledge. There are people belonging to the *Lingayat* community. They are not following the knowledge now. But when we seed-form souls, who are going to assume the true *ling* form, who are *shaligrams* (small round black stones worshipped in the path of devotion), when we become constant in our stage (of the self), then it will fit in their intellect soon. Will someone understand soon if the living picture is in front of him or will he understand through the non-living pictures? He will understand soon through the living pictures. So, what is the shortcoming? The shortcoming is that the true beads of the *Lingayat* community, the *Shaiv* community should become ready.

समय – 05.45
जिज्ञासू – बाबा, 84 जन्मों का पार्ट जिनका खुलेगा वो ही स्वर्ग में ओंयेंगे क्या?
बाबा – एक होता है स्वर्ग इसी जन्म में प्राप्त होता है । और एक स्वर्ग ऐसा होता है जो ब्रह्मा बाबा के शरीर छोड़ने के बाद प्राप्त होगा। ब्रह्मा बाबा को भी 84 जन्म मिलेंगे। और जो आत्मायें यहाँ इसी दुनियाँ में रहते–रहते शरीर के साथ ही स्वर्ग का अनुभव करेंगे; सुख का अनुभव करेंगे, दुख का अनुभव नहीं करेंगे। मान लो ये बिल्डिंग गिर गई। बहुत दब के मर गए। हाय करके चिल्लाते रह गए। लेकिन फिर भी जैसे आजकल भूकंप आते हैं बिल्डिंगें गिरती हैं, कोई ऐसे अन्दर निकल पड़ते हैं जिनको कोई भी जोखिम नहीं होता। बड़े आराम से जीते–जागते प्रसन्नचित्त निकलते हैं। तो उनको उस दुःख की भयावह स्टेज में सुख हुआ या दुःख हुआ?
Time: 05.45
Student: Baba, will only those whose part of 84 births is revealed come in heavent?
Baba: One thing is, heaven is achieved in this very birth. And the other heaven is the one which is achieved by Brahma Baba after he leaves his body. Brahma Baba will also take 84 births. And the souls who will experience heaven here, in this very world, with this body....; they will experience happiness. They will not experience sorrow. Suppose this building collapsed. Many people crushed to death under it. They are left crying in despair. But even then, just as when earthquakes occur nowadays, buildings crash; some such persons emerge from under (the debris) who are not at all hurt. They emerge (from the debris) very comfortably, alive and happy. So, in that frightening stage of sorrow did they experience happiness or sorrow?

इसलिए कुरान में लिखा है कि जब कयामत होगी तो जो खुदा के बन्दे होंगे वो बड़े मौज में रहेंगे। जीवन होते हुए भी उनको सुख अनुभव होगा, दुःख अनुभव नहीं होगा। तो वो भी 84 जन्म लेने वालों की लिस्ट है। लेकिन अंतर है। उन्होंने शरीर रहते–रहते सब कुछ देखा। विनाश का अंत भी देखा। जो मुरली में बोला है कि जिसने अंत देखा उसने सब कुछ देखा। और दूसरी कैटेगरी ऐसी है जो 84 जन्म तो लेंगे; लेकिन कुछ न कुछ वर्ष उनके कम हो जावेंगे।
This is why it has been written in *Quran* (the holy book of the people of Islam) , when destruction takes place, then the men of *Khuda* (God) will be very happy. Despite being alive (during destruction), they will experience happiness. They will not experience sorrow. So, that is also a list of persons who take 84 births. But there is a difference. They saw everything while being in the body. They also saw the end of the destruction, for which it has been said

in the *Murli* that the one who saw the end saw everything. And the second category is such that they will definitely take 84 births, but their part will be reduced by a few or more years.

समय – 7.44
जिज्ञासू – बाबा, शास्त्रों में ब्रह्मा की तीन पत्नियाँ दिखाते हैं। तो यहाँ बेहद में कैसे लागू होता है?
बाबा – ब्रह्मा की कौनसी तीन पत्नियाँ?
जिज्ञासू – गायत्री, सावित्री और सरस्वती।
Time: 7.44
Student: Baba, three wives of Brahma are depicted in the scriptures. So, how does it apply here in the unlimited sense?
Baba: Which three wives of Brahma?
Student: *Gayatri*, *Savitri* and *Saraswati*.

बाबा – उनको गंगा, यमुना, सरस्वती के रूप में भी कह देते हैं। यज्ञ के आदि में भी गंगा दादी का पार्ट बजाने वाली कोई थी कि नहीं थी। और आदि में थी तो एडवान्स पार्टी में भी कोई गंगे होगी कि नहीं होगी। आदि में भी कोई ऐसी निकली थी। जो सब देखते थे कि बिल्कुल फिदा है। आते ही बाबा के गले से लटक जाती थी, पूरे मजमे के सामने। तो आदि मे भी जमुना थी। आदि गंगा भी थी। और सरस्वती का तो पार्ट ही है मध्य में आने और मध्य में चले जाने का। वो बेसिक में भी थी तो एडवान्स में भी सरस्वती जगदम्बा का पार्ट है। मध्य में आती है और मध्य में ही लोप हो जाती है।
Baba: They are also called Ganga, Yamuna and Saraswati. Even in the beginning of the *yagya,* was there any one who played the part of Ganga *Dadi* or not? And when she was present in the beginning, will there be some *Gangey (Dadi)* in the advance party as well or not? There was one person who had emerged in the beginning as well, whom everyone used to see that she was completely infatuated. As soon as she used to come, she used to embrace Baba in front of the whole gathering. So, there was a *Yamuna* in the beginning as well as there was Ganga in the beginning. And the part of Saraswati is indeed to come in the middle and to depart in the middle. She was present in the basic (knowledge) as well as there is a part of *Saraswati Jagadamba* in the advance (party). She comes in the middle and vanishes in the middle itself.

समय – 9.20
जिज्ञासू – बाबा, शिवाजी का अर्थ क्या है?
बाबा – शिवाजी का क्या अर्थ है? शिव का अर्थ नहीं मालूम?
जिज्ञासू– मालूम है।
बाबा – हाँ। संगमयुग में जो शिव आते हैं। वो असुरों को सपोर्ट करते हैं या देवताओं को सपोर्ट करते हैं? देवताओं को सपोर्ट करते हैं। ऐसे ही जो कलियुग में शिवाजी हुए महाराष्ट्र में उन्होंने सपोर्ट किसको किया? औरंगजेब और उनके फॉलोवर्स को सपोर्ट किया या देव आत्माओं को सपोर्ट किया? देव आत्माओं को सपोर्ट किया। उन्हीं का सहयोग लिया। उनसे टकरा गए।
Time: 9.20
Student: Baba, what is the meaning of Shivaji?
Baba: What is the meaning of Shivaji? Don't you know the meaning of Shiv?
Student: I know.
Baba: Yes. Shiv, who comes in the Confluence Age; does He support the demons or the deities? He supports the deities. Similarly, whom did Shivaji, who lived in Maharashtra in the Iron Age, support? Did he support *Aurangzeb* and his followers or did he support the deity

souls? He supported the deity souls. He took the help of only those souls. He clashed with them (i.e. *Aurangzeb* and his supporters).

शिवाजी किस बात में सिद्धहस्त थे? उनको सिद्धि मिली हुई थी। किस बात में? संगठन का किला बनाने में उनको सिद्धि मिली हुई थी। मुसलमान कितने आक्रमण करते थे लाखों की सेना लेकरे। और वो ऐसे किला तैयार कर लेते थे कि उनकी सेना सारी धराशायी हो जाती थी। और किला अगर देखा कि ये नेस्तनाबूद होने वाला है मुसलमानों से, उससे पहले ही दूसरा किला तैयार कर लेते थे, अन्दर ही अन्दर। खुदा न खास्ता कहीं उनके चम्बे में फंस भी गए, तो भी निकल गए। दिखा दिया अपने जीवन में ही कि सच्चाई सर के ऊपर चढ़कर बोलती है। सच्चाई किसी से दबने वाली नहीं है।
In which art was Shivaji an expert (*siddhahast*)? He had an expertise (*siddhi*).... in what? He was expert in building fort-like gatherings. Muslims used to attack a lot taking [the help of] army numbering in lakhs (hundred thousands). And he used to build such forts that their (attackers) entire army used to be defeated. And if they (Shivaji) find that this fort is going to be destroyed by the Muslims, they used to build another fort internally (secretly) well before that. Even if by chance he was entangled in their trap, he escaped. He showed in his own life that truth climbs over the head and speaks. Truth cannot be suppressed by anyone.

समय – 11.24
जिज्ञासू – शिवबाबा सन्मुख न रहे तो बहुत सारे संकल्प पैदा होते हैं। जब शिवबाबा के सन्मुख आए तो संकल्प सब नष्ट हो जाते हैं।
बाबा – सबके लिए ऐसा नहीं है। कोई विरोधी पार्टी की आत्मायें यहाँ आकर बैठ जाए। तो उसको संकल्प उठेंगे या नहीं उठेंगे? उठेंगे। ढेर सारे संकल्प उठेंगे क्योंकि विरोधाभास से आया है। विरोधाभास की दुनियाँ से आया है। तो उनके लिए ये बात लागू नहीं होगी, उन आत्माओं के लिए। किनके लिए लागू होगी? ये उन आत्माओं के लिए बात लागू होगी जो जन्म–जन्मांतर बाप के सहयोगी बनके रहे हैं। बाप के सहयोग में रहे हैं। बाप के विरोध में नहीं रहीं। तो उनको यहाँ सामने आने से भी ऐसा लगेगा, जब सामने आते हैं तो सब क्लीयर हो जाता है। बाहर की दुनियाँ में जाते हैं तो संग का रंग बाहर की दुनियाँ का लग जाता है। जैसे बहुत से ऐसे कहते हैं कि फोन भी आ जाता है; तो फोन आता है तो सारी बातें भूल जाते हैं। वैसे बुद्धि में चलता है कि ये पूछेंगे, वो पूछेंगे, ये बात ऐसे, वो बात वैसे। लेकिन जब फोन की लाईन का कनेक्शन आया, वाईब्रेशन वहाँ पहुंचा और सब भूल जाते हैं।
Time: 11.24
Student: When Shivbaba is not face to face many thoughts emerge (in our mind). When we come in front of Shivbaba all the thoughts vanish.
Baba: It is not the case for everyone. If a soul belonging to an opposition party comes and sits here, then will (opposite) thoughts emerge in his/her mind or not? They will. A lot of (opposite) thoughts will emerge because he has come with a feeling of opposition (*virodhabhaas*). He has come from a world with a feeling of opposition. So, this case will not be applied to them, to those souls. For whom will it be applicable? This case will be applicable to those souls which have remained helpful to the Father for many births. They have been supportive to the Father. They didn't oppose the Father. So, when they come here face to face (to the Father), they will feel like this; when they come face to face, everything becomes clear. When they go to the outside world they are coloured by the company of the outside world. For example many say that when they receive even a phone call (from Baba), when they receive a phone call, they forget everything. Otherwise, they think that they will ask this, they will ask that; this is like this; that is like that. But when their phone line is connected (to Baba), as soon as the vibrations (of Baba) reach there, they forget everything.

समय – 15.15
जिज्ञासू – बाबा, तमोप्रधान से सतोप्रधान बनने में 40–50 साल लगते हैं।
बाबा – 50–60 साल लगते है।
जिज्ञासू – वो कहाँ से गिने जायेंगे? 76 से गिने जायेंगे?
बाबा – सतोप्रधान जब बाप होगा तब ही सतोप्रधान बनेंगे कि पहले से ही बनना शुरू हो जायेंगे।
जिज्ञासू – जब बाप होगा तब।
बाबा – तो तुम्हें पता नहीं है कि बाप कबसे होता है?
जिज्ञासू – 76 से।
बाबा – 76 में 60 साल जोड़ दो तो कितने हुए? कितना हुआ? 36 हुआ, 2036।
Time: 15.15
Student: Baba, it takes 40-50 years to change from *tamopradhan* (dominated by the quality of darkness or ignorance) to *satopradhan* ones (consisting mainly in the quality of goodness and purity).
Baba: It takes 50-60 years.
Student: From when will it be calculated? Will it be counted from (19)76?
Baba: Will you become *satopradhan* when the Father becomes *satopradhan*, or will you start becoming *satopradhan* before that?
Student: When the father becomes (*satopradhan*).
Baba: So, don't you know from when the father becomes (*satopradhan*)?
Student: From 76.
Baba: If you add 60 years to 76, then how many years does it make? How many? It comes to 36 i.e. 2036.

समय – 15.57
जिज्ञासू – बाबा, तिरुपति में बाल क्यों कटवाते हैं?
बाबा – तिरुपति को कितनी पत्नियाँ थी?
जिज्ञासू – दो।
बाबा – तो जिसकी दो पत्नियाँ होंगी, वो दो पत्नियाँ सतयुग त्रेता में देवताओं को होती हैं या द्वापर कलियुग में होती हैं? और तिरुपति का जो झगड़ा है वो कहती हैं कि तेरो पति, मेरो नहीं तेरो पति, तेरो नहीं मेरो पति। ये झगड़ा द्वापरयुग की बात है या सतयुग त्रेतायुग की बात है? कहाँ की बात है? द्वापरयुग और कलियुग की बात है।
Time: 15.57
Student: Baba, why do people get their heads shaved off at *Tirupati* (a place in South India)?
Baba: How many wives did *Tirupati* have?
Student: Two.
Baba: So, the one who has two wives; do the deities in the Golden Age and Silver Age have two wives or do the people in the Copper and Iron Age have (two wives)? And the dispute of *Tirupati* – she (one wife) says he is your husband (*tero pati*), not mine, he is your husband; (and the other one says) he is not your husband; he is my husband (*mero pati*). Is this dispute observed in the Copper Age or in the Golden Age and the Silver Age? To which time does it pertain? It is about the Copper Age and Iron Age.

तो द्वापरयुग, कलियुग की शूटिंग में ये तेरो पति, मेरो पति का झगड़ा चला होगा। अब उस झंझट में जो पड़ेंगे उनका माथा जरूर मूड़ा जाएगा। और ऐसा है कोई भी नहीं जो माथा मूड़वाने न जाता हो। बच्चे भी जाते हैं, बूड्ढ़े भी जाते हैं, औरतें भी जाती हैं। सब माथा मूड़वाते हैं जाके। कितना भी ज्ञान समझाओ कि इन परचिंतन की बातों में नहीं पड़ना चाहिए; लेकिन फिर भी पड़ते हैं। भारत माता का जो नक्शा है, उसमें ऊपर की ओर, उत्तर

साईड में तिरुपति का मंदिर है या नीचे की ओर दक्षिण साईड में मंदिर है? दक्षिण साईड में वो मंदिर है। क्या? राईटियस टांग में भी नहीं है। लेफ्टीस्ट में है। शूटिंग पीरियड की उतरती कला है।

The shooting of this dispute about 'your husband, my husband' must have taken place in the Copper Age and the Iron Age. Well, the heads of those who involve themselves in that problem will definitely be shaved off. And there is nobody who does not go there to get his/her head shaved off. Children go there as well as old persons go and women go there too. Everyone goes and gets his/her head shaved off there. Howevermuch you explain the knowledge that you should not involve yourself in these matters of thinking about others, they involve themselves in iteven then. In the map of the Mother India, is the temple of *Tirupti* located above, towards the northern side or is the temple located downwards on the southern side? That temple is on the southern side. What? It is not in the righteous [side] of the leg either. It is on the leftist side. It is the stage of descent in the shooting period.

समय – 17.45
जिज्ञासू – बाबा, याद का जहर पीना है।
बाबा – याद का जहर पीना है? याद कोई जहर होता है? ये नई बात कहाँ से निकाल दी? याद का घृत पीना है।
जिज्ञासू – अमृत।
बाबा – अमृत तो ज्ञान को कहा जाता है। याद का घृत पीना है।
जिज्ञासू – तो जहर और जौहर का मतलब क्या है?
बाबा – याद का जौहर। जौहर माना जैसे तलवार होती है। उसमें धार बनाई जाती है। तो उसको कहते है धारदार तलवार, जौहर वाली तलवार। तो तलवार में जौहर थोड़े ही होता है। तलवार को जो चलाने वाला है उसमें याद का जौहर भरा हुआ होता है, तो अच्छी तलवार चलाता है। यहाँ भी बाबा कहते हैं कि बाबा की याद में रहेगें तो ज्ञान की तलवार तुम्हारी ज्यादा जौहर वाली होगी, ज्यादा अच्छी चलेगी, ज्यादा लोगों के ऊपर असर पड़ेगा। वो जौहर है, जहर नहीं।

Time: 17.45
Student: Baba, we have to drink the poison (*jahar*) of remembrance.
Baba: Do we have to drink the poison (*jahar*) of remembrance? Is remembrance a (kind of) poison? What is this new invention? We have to drink the ghee (*ghrit*) of remembrance.
Student: Nectar *(amrit).*
Baba: Knowledge is called nectar. We have to drink the ghee (*ghrit*) of remembrance.
Student: So, what does *jahar* and *jauhar* mean?
Baba: The *jauhar* (excellence) of remembrance. *Jauhar* means, for example there is a sword. Its edge is sharpened. So, it is called sharp-edged sword, the sword with excellence. So, the excellence is not in that sword. The excellence of remembrance is in the person who uses that sword, (it is then that) he is a good swordsman. Here too Baba says: if you remain in Baba's remembrance, your sword of knowledge will be with more excellence, it will work better; it will have an influence on more people. It is *jauhar* (excellence) (and) not *jahar* (poison).

समय – 18.56
जिज्ञासू – नेक्स्ट टू गोड राम वाली आत्मा पार्ट बजाती है.....
बाबा – राम तो फेल हो गया। वो कैसे नेक्सट् टू गॉड हो जाएगा ? फैलीयर को नेक्सट् टु गॉड कहेंगे? जो राम फैल हो गया वो आदि की बात है, फाईनल पेपर की बात है या शुरूवात के पेपर की बात है?
जिज्ञासू – शुरूवात की बात है।
बाबा – शुरूवात की बात है।

जिज्ञासू – लेकिन ..... का गायन है ना।
बाबा – राम थोड़े ही है। राम राज्य कहा जाता है। क्या? राम वाली आत्मा जो है वो राज्य ऐसा स्थापन करती है। बाकि तो बताया है कि जो नारायण बनते हैं वो ही राम–सीता बनते हैं। नारायण नहीं बनेंगे तो राम–सीता भी नहीं बनेंगे। जिस नम्बर के नारायण बनेंगे उस नम्बर के राम–सीता बनेंगे।
Time: 18.56
Student: The soul of Ram plays the part of 'next to God'...
Baba: Ram failed indeed. How will he be next to God? Will a failure be called next to God? Is the topic of 'Ram failed' of the beginning, is it a topic of the final paper or is it a topic of the paper in the beginning?
Student: It is a topic of the beginning.
Baba: It is a topic of the beginning.
Student: But....it is praised, isn't it?
Baba: It is not Ram. It is said *Ram rajya* (kingdom of Ram). What? The soul of Ram establishes such a kingdom. As for the rest, it has been said that the one who becomes Narayan becomes Ram-Sita. If they do not become Narayan, they will not become Ram-Sita either. They will become Ram Sita of the same serial number as they become Narayan.

समय – 20.00
जिज्ञासू – बाबा, शंकर की जटाओं से, गंगा के मुख से जल शिवलिंग पर गिरते हुए दिखाते हैं। इसका बेहद में अर्थ क्या है?
बाबा – बाबा कहते हैं कि कन्याओं–माताओं के मुख से ज्ञान सुनना अच्छा है या भाईयों के मुख से ज्ञान सुनना अच्छा है?
जिज्ञासू – कन्याओं–माताओं से।
Time: 20.00
Student: Baba, water is shown to be falling on the *Shivling* from the mouth of Ganga in the hairlocks of Shankar. What does it mean in an unlimited sense?
Baba: Baba says, is it good to listen to knowledge from the mouth of virgins and mothers or is it good to listen from the mouth of brothers?
Student: From the virgins and mothers.

बाबा – कन्याओं–माताओं के मुख से ज्ञान सुनाया जाए उससे सिद्धि मिलेगी। भाई लोग बैठकरके जो ज्ञान सुनाते हैं उससे सिद्धि मिलने वाली नहीं है। मान लो! शंकर को त्रिनेत्रधारी दिखाते हैं। अब चित्रों में भाषण करते हुए तो शंकरजी को नहीं दिखाया है। दिखाया है क्या? क्यों नहीं दिखाया है? क्या शंकर में शिव नहीं आते हैं? शंकर में शिव आते हैं या नहीं आते हैं? आते तो हैं। फिर उनको भाषण करते हुए चित्र क्यों नहीं दिखाए हैं? इसलिए नहीं दिखाए कि जो शंकर का चित्र है, उसमें चरित्र बजाने वाला देहधारी है या निराकार है?
जिज्ञासू – निराकार।
Baba: Success can be achieved if knowledge is narrated through the mouth of virgins and mothers. The knowledge that the brothers sit and narrate is not going to bring success. Suppose, Shankar is shown to be three eyed (Trinetri); well, Shankarji has not been shown to be giving lectures in the pictures. Has he been depicted? Why has he not been depicted? Does Shiv not come in Shankar? Does Shiv come in Shankar or not? He does come. Then why has he (i.e. Shankar) not been shown giving lectures in the picture? He has not been shown (delivering lectures) because in the picture of Shankar is the one who plays the part a bodily being or an incorporeal one?
Student: The incorporeal one.

बाबा – वो तो निराकार पार्ट बजाता है ज्ञान सुनाने का। और ज्ञान भी सुनाता है तो गुप्त बनकर सुनाता है या संसार में प्रत्यक्ष होकर ज्ञान सुनाता है? गुप्त होकर ज्ञान सुनाता है। इसलिए कोई समझ ही नहीं सकता। जब संसार में प्रत्यक्ष हो जाता है तो वानप्रस्थी हो जाता है। वानप्रस्थी हो जाना माना? भाषण देने का काम बंद हो जाता है, क्लेरिफिकेशन देने का काम खलास हो जाता है। इसलिए शंकर की जटाओं में जो गंगा दिखाई जाती है उसका मतलब ये है कि गंगा जब अंत में निकली है, तो इतनी गंगा ने सेवा की है, इतनी आत्माओं को श्रेष्ठ बनाया है, अंतिम स्टेज में पहुँचाया है; पुरूषार्थ के अंतिम स्टेज मे कि वो आत्मायें भगवान के नजदीक पहुँचने वाली बन गई। पवित्र बन गई। इसलिए जटाओं में कन्या का चित्र दिखाते हैं कि कोई कन्या है गंगा के रूप में जो सेवा का बहुत बड़ा पार्ट बजाती है। पार्वती को भी इतना बड़ा पार्ट बजाते हुए नहीं दिखाते हैं सेवा का। गंगा का गायन है। पतित पावनी गंगा।

Baba: It is the incorporeal one who plays the part of narrating the knowledge. Moreover, when He narrates the knowledge does He narrate it remaining hidden or does He narrate the knowledge by becoming revealed in the world? He narrates the knowledge by remaining hidden. This is why nobody can understand at all. When He is revealed in the world, He becomes *vaanprasthi* (retired/beyond the stage of speech). What does becoming *vaanprasthi* mean? (It means) the task of delivering lectures stops, the task of giving clarifications ends. This is why the (river) Ganges (Ganga) that is depicted in the hairlocks of Shankar means that when Ganga emerged in the end, she has served so much, she has made so many souls righteous, enabled them to reach the last stage, to the ultimate stage of the special effort for the soul *(purusharth)* that those souls became the ones to reach near God, they became pure. This is why a picture of a virgin is shown in the hairlocks indicating there is a virgin in the form of Ganga who plays a very big part of service. Even Parvati is not depicted to be playing such a big part of service. Ganga is praised (as) 'Ganga, the purifier of the sinful ones'.

समय – 22.42

जिज्ञासू – राम को सतयुग में शास्त्रों में बताया और श्री कृष्ण को द्वापर में क्यों बताया?

बाबा – क्योंकि जब शूटिंग होती है। चार युगों की रिहर्सल होती है। तो त्रेता युगी शूटिंग में राम वाली आत्मा प्रत्यक्ष होती है। सन् 76 से त्रेता युगी शूटिंग की शुरूवात। सन् 76 में राम वाली आत्मा अर्थात् प्रजापिता वाली आत्मा वो 40 वर्ष एड होते हैं 60 साल में तो 100 साल आयु पूरी हो जाती है। माना 100 साल ब्रह्मा के मृत्युलोक में खलास हो जाते हैं। फिर कौनसा पार्ट चलता है? वो निराकार राम साकार राम में प्रेवश करके बाप का पार्ट बजाता है जो टीचर के रूप में संसार में प्रत्यक्ष होता है। इसलिए त्रेतायुगी शुटिंग जब शुरू कहें तब होती है राम की प्रत्यक्षता। और वो 12 वर्ष तक का पीरियड नूंधा हुआ है। क्या? 16 तक का पीरियड है सतयुगी शूटिंग का और त्रेतायुगी शूटिंग का पीरियड है 12 साल का। सन् 76 से लेकर सन् 87–88 तक कितने साल हुए? बारह साल हो गए। तो बारह साल में वो राम वाली आत्मा प्रत्यक्ष हो जाती है। वो अपनी राजाई स्थापन कर लेती है। पहले बैगर फिर बाद में बैगर टू प्रिन्स के रूप में स्थिर हो जाती है। तो वो त्रेतायुग में राम को दिखाया है।

Time: 22.42

Student: Why has Ram been depicted in the Golden Age in the scriptures and Shri Krishna depicted in the Copper Age?

Baba: It is because when the shooting takes place, when the rehearsal of the four ages takes place, during the Silver Age shooting, the soul of Ram is revealed. The shooting of the Silver Age begins from the year (19)76. In the year 1976, when 40 years are added to the 60 years age of the soul of Ram, i.e. the soul of Prajapita, 100 years age is finished. It means that 100

years of the age of Brahma are completed in the world of death *(mrityulok)*. Which part is played after that? That incorporeal Ram enters in the corporeal Ram and plays the part of the father who is revealed in the form of a teacher in the world. This is why the revelation of Ram takes place when the shooting of the Silver Age begins. And for that 12 years period is fixed. What? The Golden Age shooting period is for 16 years and the period of the Silver Age shooting is for 12 years. How many years is it from 76 to 87-88? It is 12 years. So, in those twelve years that soul of Ram is revealed. He establishes his kingship. Earlier he was beggar and later on he becomes constant in the form of 'beggar to Prince'. So, Ram has been depicted in the Silver Age.

और फिर उसके बाद होती है द्वापरयुगी शूटिंग। 88 के बाद 89–90 से। वो जो द्वापरयुगी शूटिंग है 8 साल की 88–89 से 98 तक। उस शूटिंग पीरियड में वो कृष्ण वाली आत्मा जो है। जो सन् 87–88 में उनकी 100 साल आयु पूरी होती है। सन् 47 में परमात्मा शिव ने दादा लेखराज ब्रह्मा में प्रवेश किया। और प्रवेश करके उनके मुख के द्वारा मुरली चलाना शुरू की। उससे पहले ब्रह्मा के मुख से मुरली नहीं चलाई जाती थी। तो जब से मुरली चलाई गई तब से प्रवेशता साबित हो गई। तो सन् 47 में 60 और उसमें 40 साल और जोड़ दिए तो कितने हुआ? 87–88। तो 88 का जो पीरियड है वो कृष्ण वाली आत्मा के प्रत्यक्ष होने का टाईम है।
And after that the Copper Age shooting takes place after 88, i.e. from 89-90. That Copper Age shooting for 8 years from 88-89 to 98; in that shooting period, that soul of Krishna completes 100 years age in the year 87-88. The Supreme Soul Shiv entered in Dada Lekhraj Brahma in the year (19)47 and after entering (in him), He started narrating *Murlis* through his mouth. Before that *Murlis* did not used to be narrated through the mouth of Brahma. So, the entry (of Supreme Soul) is proved ever since *Murlis* began to be narrated. So, 60 (years age) in the year (19)47 and if 40 years are added to it, then which year does it come to? 87-88. So, the period of the year (19)88 is the time for the revelation of the soul of Krishna.

प्रत्यक्षता भी गुप्त रूप में रहती है। जैसे गर्भ में बच्चा आता है तो माँ को और परिवार वालों को पता चलता है। औरों को पता नहीं चलता। ऐसे ही वो कृष्ण की सोल जो है वो राम वाली आत्मा के बुद्धिरूपी पेट में प्रवेश होकर ब्राह्मणों की संगमयुगी दुनियाँ में प्रत्यक्ष होना शुरू हो जाती है। 88 से लेकर 98 तक गुप्त रहती है। जैसे पेट में बच्चा गुप्त रहता है। और 98 के बाद अखबारों में प्रत्यक्ष हो जाता है। अखबारों में, रेडियो में, वो प्रत्यक्षता, वो पहला जन्म जैसे हो गया। इसलिए शूटिंग के हिसाब के आधार पर द्वापर में कृष्ण को डाल दिया है। बाकी ऐसे नहीं है कि कृष्ण कोई द्वापर से आता है। नहीं। द्वापर युगी शूटिंग में कृष्ण बच्चे की प्रत्यक्षता होती है। और त्रेतायुगी शुटिंग में राम बाप की प्रत्यक्षता होती है।
The revelation remains secret. For example, when a baby comes in the womb, the mother and the members of the family come to know. Others do not come to know. Similarly that soul of Krishna enters in the womb-like intellect of the soul of Ram and starts being revealed in the Confluence Age world of Brahmins from 88 to 98. It remains hidden just as a foetus remains hidden in the womb. And after 98 it is revealed in the newspapers. Revelation through newspapers, radio is like the first birth. This is why, on the basis of the shooting Krishna has been put in the Copper Age. Otherwise, it is not that Krishna comes from the Copper Age. No. The child Krishna is revealed in the Copper Age shooting. And in the Silver Age shooting the father Ram is revealed.

समय – 26.09
जिज्ञासु – बाबा, यू.पी. का बेहद का अर्थ क्या है?
बाबा – यू माना क्या? यू माना यु (you)। आप हमको कहें, हम तुमको कहें। यू माना तुम। और पी माना? पी माना पियो। हाँ, डाईरेक्शन मिला, 'तुम पियो'। ये दक्षिण भारत वाले भी पीते हैं और तुम भी पीते हो। वो पहले पी लेते हैं। कौन? दक्षिण भारत वाले जो भाषा भी नहीं जानते हैं वो पहले पी लेते हैं। उनके पीने से काम नहीं चलेगा। क्यों? क्योंकि भाषा ही पूरी नहीं जानते हैं तो गुह्यार्थ को भी समझ नहीं सकते हैं। इसलिए डाईरेक्शन है 'तुम पियो'। यु पी। तुम पियो तो काम बन जाएगा। लेकिन वो पीते ही नहीं। कुम्भकरण की निद्रा में सोए पड़े हैं।

Time: 26.09
Student: Baba, what does U.P. mean in an unlimited sense?
Baba: What does *U* mean? *U* means you. You tell me, I tell you. *U* means you. And what does *P* mean? *P* means '*piyo*' (drink). Yes, you received a direction: 'you drink'. Those from South India drink and you drink, too. They drink first. Who? Those from South India, who do not even know the language, drink first. The task will not be accomplished if they drink. Why? It is because they do not know the language completely. So, they cannot know the deeper meanings either. They cannot understand. This is why a direction has been given: You drink. *U.P.* When you drink, the task will be accomplished. But they do not drink at all. They are in the sleep of *Kumbhakarna* (a character in the epic Ramayana).

इसीलिए यू.पी वालों से खास बोला हुआ है, यू.पी को धर्मयुद्ध का खेल दिखाना है। माना दक्षिण भारत वाले सुन तो लेते हैं, ज्ञान को समझ भी लेते हैं, बाप को प्रत्यक्ष भी कर लेते हैं; लेकिन धर्मयुद्ध की लड़ाई में मैदान में नहीं आते। और यू.पी. क्या करेगा? यू.पी. की आत्मायें जैसे ही निकलेंगी, जैसे ही बाप को पहचानेंगी बस धर्मयुद्ध शुरू कर देंगे। या तो असत्य रहेगा या तो हम रहेंगे। वैसे भी देखा जाए दुनियावी तौर से, तो उत्तर भारत के लोग ज्यादा लडंकी होते हैं, धमचक्कर मचाने वाले होते हैं या दक्षिण भारत के लोग ज्यादा धमचक्कर मचाने वाले होते हैं? यू.पी. के लोग, बिहार के लोग बहुत धमचक्कर मचाने वाले होते हैं।
That is why it has especially been said to those from U.P (Uttar Pradesh). U.P. has to show the drama of the religious war (*dharmayudh*). It means that those from South India do hear and also understand the knowledge, they also reveal the Father, but they do not come to the battlefield for the religious war. And what will UP do? As soon as the souls of UP come (in knowledge), as soon as they recognize the Father, that is all; they will start the religious war. (They will say) Either untruth shall prevail or **we** shall prevail. Even so , if we see, from the worldly point of view, are the people of northern India more quarrelsome, and create commotion or do the people from South India create more commotion? People from UP, Bihar create more commotion.

समय – 28.24
जिज्ञासू – बाबा, फुल बैगर टू फुल प्रिन्स, ये किसके लिए लागू होता है? राम वाली आत्मा के लिए?
बाबा – वो गवर्मेन्ट में 5 इयर प्लान बनाए हुए हैं। दुनियावी गवर्मेन्ट भी फॉलो किसको करती है? भगवान को ही फॉलो करती है। लेकिन भगवान की करनी में और दुनिया वालों की करनी में अंतर तो होगा ना। तो वो गवर्मेन्ट भी 5 इयर प्लान बनाती है लेकिन सफल नहीं होते हैं। 5 इयर प्लान तो बनाती हैं। एक बार 5 इयर प्लान बनाया, असफल हो गया। फिर दूसरे साल बनाया। फिर 5 इयर प्लान दसवां साल चल गया। फिर वो भी सफल नहीं हुआ। फिर तीसरी बार बना दिया। 15 साल का हो गया। फिर सफल नहीं हुआ और अभी तक भी 5 इयर प्लान बनाते रहते हैं। उनके तो सफल नहीं होते हैं क्योंकि उनके

विधि–विधान ही गलत हैं। और यहाँ? यहाँ तो भगवान ही खुद 5 इयर प्लान बनात हैं। सम्पूर्णता वर्ष कौनसा हुआ? 77। सन् 77 से लेकर 5 वर्ष एड करो।
जिज्ञासू – 81
Time: 28.24
Student: Baba, to whom is full beggar to full prince applied? Is it for the soul of Ram?
Baba: Five year plans have been made by that (Indian) Government. Whom does even the worldly government follow? It follows God only. But there will be a difference between the actions of God and the actions of the people of the world, won't there? So, that Government also prepares 5 year plans. But they do not succeed. They do make 5 year plans. They prepared the five year plan once, it failed. Then they prepared (it again) next year. Then the 5 year plan continued upto the tenth year. Then that too did not succeed. Then they prepared it a third time. Fifteen years passed. It did not succeed again. And up until now they continue to prepare five year plans. Their plans do not succeed because their methods are wrong. And what about here? Here God Himself prepares the five year plan. Which is the year of perfection? 77. Add 5 years to the year 77.
Student: 81.

बाबा – 81 में पूरा होता है 5 वर्ष। और 82 में वो फुल बैगर, जिसको कोई ठिकाना नहीं होता। बैगर की परिभाषा बताई मुरली में, बैगर के पास तो फिर कुछ भी न हो। कुछ भी माना कपड़े भी नहीं। हाँ, कोई सम्बन्धी नहीं। कोई घर–बार नहीं। कोई बैंक बैलेंस नहीं। बेगर को बैंक बैलेंस होता है क्या? हाँ, आज के झूठे बेगरर्स को तो होता है। लेकिन जो असली होते हैं बैगर उनको कोई बैंक बैलेंस नहीं है। और ईश्वरीय ज्ञान में तो बैगर होना बहुत ज़रूरी है। अगर किसी के पास 100–200, हजार–दो हजार, लाख–दो लाख है भी, तो क्या करें? ईश्वरीय सेवा में लगा करके बैगर बन जाए। फुल बैगर बनेगा तो फुल प्रिन्स भी बनेगा।
Baba: The five years are completed in 81. And in 82, that full beggar, who did not have any place (of his own)...; a beggar has been defined in the *Murlis* (thus) , a beggar should not have anything. Nothing means not even clothes. Yes, no relative. No household. No bank balance. Does a beggar have any bank balance? Yes, today's false beggars do have (a bank balance). But the true beggars don't have any bank balance. It is very important to become a beggar in the knowledge of God. Even if someone has 100-200, thousand, lakh-two lakh (hundred-two hundred thousand rupees), what should he do? He should invest it in the service of God and become a beggar. If he becomes a full beggar, he will also become a full prince.

तो ये प्लान सन् 77 से शुरू होता है। 77 से शुरू होकरे और वो फुल बैगर 82 में जाकर अपने पैरों खड़ा हो जाता है। जो फुल बैगर से फुल प्रिन्स बन जाएगा, तो उसको किसी से भीख माँगने की दरकार रहेगी या दूसरे उसके आधीन होकर आवेंगे? जो प्रिन्स होगा, वो किसी के आधीन रहेगा या दूसरे उसके आधीन होंगे? दूसरे उसके आधीन हो सकते हैं, लेकिन प्रिन्स सिवाए एक राजा के और किसी के आधीन नहीं हो सकता। तो ये शिवबाबा का प्लान है, 5 इयर प्लान। एक ही बार चलता है और एक ही बार में फुल बैगर टू फुल प्रिन्स संसार में प्रत्यक्ष हो जाता है।
So, this plan begins from the year 77. It starts from 77 and that full beggar stands on his feet (i.e. becomes self sufficient) in 82. Will the one who changes from a full beggar to a full prince need to beg before anyone or will others become his subordinates? Will a Prince be dependant on someone or will others be dependant on him? Others can be dependant on him, but a Prince cannot depend on anyone except the king. So, this is ShivBaba's plan, the five

year plan. It is implemented only once and in one chance 'the full beggar to full prince' is revealed in the world.

समय – 31.39
जिज्ञासू – बाबा, अकेला चना भाड़ नहीं फोड़ सकता इसका अर्थ क्या है?
बाबा – सबसे ज्यादा मोटा छिलका कौनसे दाने का होता है?
जिज्ञासू – चावल।
बाबा– चावल का? चने का छिलका बहुत बड़ा भी होता है और मोटा भी होता है। लेकिन चना जो बीज है वो प्रवृत्ति मार्ग वाला बीज है या निवृत्ति मार्ग का बीज है?
जिज्ञासू – प्रवृत्ति मार्ग का।
Time: 31.39
Student: Baba, what is meant by '*akela cana bhaar nahi for sakta'* (one swallow doesn't make a summer)?
Baba: Which seed has the thickest peel?
Student: Rice.
Baba: Rice? The peel of gram seed (*chana*) is very big as well as thick. But does the seed of gram belong to the path of household *(pravritti marg)* or to the path of renunciation *(nivritti marg)*?
Student: The path of household.

बाबा– कैसे? उसमें दो दलें होती है। जैसे बाजरा है, ज्वार है; इसमें दो दालें नहीं होते हैं। वो हो गया निवृत्ति मार्ग का और चना, मटर या कोई भी दाल, वो डबल दाल होती है। मोटा छिलका होता है। बड़ा छिलका होता है। प्रश्न क्या था? चना? अकेला चना भाड़ नहीं फोड़ सकता। तो चने के लिए ये कहावत है कि अकेला कुछ नहीं करेगा। अकेला माना प्योरिटी है ही नहीं। जो अकेला है, जैसे सन्यासी। सन्यासी अकेले होते हैं या युनिटी में होते हैं? उनकी तो युनिटी है ही नहीं। अपनी ही घर–बार की युनिटी तोड़ देते हैं तो दूसरों की युनिटी क्या बनायेंगे? तो उनकी युनिटी ही नहीं।
Baba: How? There are two cotyledons in it. For example there is *baajra* (pearl millet). There is *jwaar* (great millet). They don't have two cotyledons. That belongs to the path of renunciation and gram, pea or any pulse consists two cotyledons. Its peel is thick. Its peel is big. What was the question? Gram (*cana*)? A single swallow cannot make a summer. So, this is a saying about gram that a single *cana* (a person) won't do anything alone. If someone is single, it means that there is no purity at all (in him). The one who is single, for example *Sanyasis; Sanyasis* are single. Or do they live in unity? They don't have unity at all. They break the unity of their **own** family. So, how will they build the unity of others? So, they do not have unity at all.

तो चने के लिए ये कहावत है कि जब तक अकेला है तब तक वो कुछ नहीं कर सकता। भाड़ माना ये दुनिया क्या है? हैल (नरक) है। दुनिया है एक प्रकार का हैल। उस हैल को नष्ट करने का काम अकेला नहीं कर सकता। कब करेगा? जब संगठन तैयार करे। और संगठन तैयार होता है प्योरीटी से। प्योरीटी होगी तो युनिटी बनेगी। और युनिटी सच्ची बनेगी तो झूठी दुनिया का विनाश होगा। नहीं तो झूठी दुनिया, ये हैल दुनिया, ये खतम नहीं हो सकती। भंभोर है। इस भंभोर को आग तब ही लगेगी जब संगठित रूप से बीजरूप आत्मायें संसार के सामने आयेंगी। इसलिए बोला एक भी पावरफुल संगठन तैयार होने पर एक संगठन दूसरे संगठन को खींचते हुए। अंत में 108 की माला का संगठन संसार के सामने प्रत्यक्ष हो जावेगा। अभी संगठन नज़र आ रहा है कहीं या और ही बिखरते हुए नज़र आ रहे है? क्या देखने में आ रहा है? और ही सब दिल के दिल आपस में टूटे हुए हैं। जो

गीतापाठशालायें चल रही हैं वो भी आपस में झगड़ रहे हैं। सब आपस में टकरा रहे हैं। अब चना बेचारा अकेला रह गया। तो कहावत बन गई, अकेला चना भाड़ नहीं फोड़ सकता।
So, there is a saying for a gram seed that as long as it is alone, it cannot do anything. *Bhar* means, what is this world? It is a hell. The world is like a hell. A person cannot perform the task of destroying that hell alone. When will he do it? When he prepares a gathering and the gathering is built through purity. When there is purity, there will be unity. And if the unity is true then the false world will be destroyed. Otherwise, this false world, this world which is a hell cannot be destroyed. It is [like] a haystack (*bhambhor*). This haystack will be set on fire only when the seed-form souls come in front of the world in a united form. That is why it has been said, even if one powerful gathering is ready, one gathering will pull the other gathering and in the end the gathering of the rosary of 108 will be revealed before the world. Is the gathering visible anywhere now or is it appearing to be more disintegrating? What can be seen? Even more, the hearts are broken amongst each other. The *Gitapathshalas* that are functioning, they too are fighting amongst themselves. Everyone is clashing with each other. Well, the poor gram seed is left alone. So, the saying has been made, a single swallow cannot make a summer.

समय – 34.48
जिज्ञासू – साक्षात्कारों का रहस्य ब्रह्मा बाबा से पहले अष्टदेवों ने सुना था क्या पहले?
बाबा – हं?
जिज्ञासू – साक्षात्कारों का रहस्य ब्रह्मा बाबा से पहले अष्टदेवों को सुनाया गया था क्या?
बाबा – ठीक है। जो सूर्यवंशी होंगे, पहले अपने सूर्यवंशी घराने को सुनायेंगे। और ब्रह्मा बाबा को सुनाने वाले कौन थे? और अष्टदेवों को सुनाने वाला कौन था? बाप है अष्टदेवों को सुनाने वाला और ब्रह्मा बाबा को सुनाने वाला (वाली) माता है। तो अंतर पड़ता है ना।
Time: 34.48
Student: Did the eight deities *(ashta dev)* listen to the secret of the visions before Brahma Baba?
Baba: Hum?
Student: Was the secret of the visions narrated to the eight deities before being narrated to Brahma Baba?
Baba: It is correct. Those who belong to the Sun dynasty *(Suryavanshi)* will first of all narrate to those belonging to their Sun Dynasty. And who narrated to Brahma Baba? And who narrated to the eight deities? The Father narrates to the eight deities and the mother narrates to Brahma Baba. So, it makes a difference, doesn't it?

समय – 35.26
जिज्ञासू – गंगा के मुख से जल निकलकर शिवलिंग के ऊपर गिरता हुआ दिखाते हैं।
बाबा – गंगा जो ज्ञान जल सुनाती है। उस ज्ञान जल से जो शिव का साकार स्वरूप है, उसकी भी गति–सदगति होती है। क्या? कन्याओं माताओं के मुख से ही उद्धार होगा। माता को गुरू ज़रूर बनाना पड़े। माता गुरू बिगर उद्धार नहीं हो सकता। ये मातायें हैं, गंगा, यमुना, सरस्वती। उनमें सरस्वती का, यमुना का उतना गायन नहीं है। किसका गायन है? गंगा का गायन है। क्यों गायन है इतना गंगा का? क्योंकि गंगा की देहअभिमान की मिट्टी चिपकने वाली नहीं होती है। और जो नदियाँ हैं, उनकी मिट्टी चिपकने वाली है।
Time: 35.26
Student: It is shown that water emerges from the mouth of Ganga and falls on the *Shivling*.
Baba: The water of knowledge narrated by Ganga causes the salvation and true salvation (*gati-sadgati*) of the corporeal form of Shiv too. What? The uplift will be brought about only through the (knowledge narrated through the) mouth of virgins and mothers. You will

certainly have to make the mother as your *guru*. You will not be uplifted without a mother-*guru*. These Ganga, Yamuna, Saraswati are mothers. Among them, Saraswati, Yamuna are not praised so much. Who is praised? Ganga is praised. Why is Ganga praised so much? It is because the mud of body consciousness of Ganga is not sticky and the mud of the other rivers is sticky.

समय – 36.28
जिज्ञासू – राम और कृष्ण जन्म–जन्मांतर के साथी है। फिर भी कृष्ण वाली आत्मा क्यों नहीं पहचान पा रही है?
बाबा – क्यों नहीं पहचान पा रही? क्योंकि बाप–बेटे का कनेक्शन है। बाप रचयता होता है। और बच्चा रचना होता है। बच्चा, बच्चा बुद्धि होगा। और बाप? बाप तो सगीर बुद्धि होगा, सालिम बुद्धि होगा। तो अंतर नहीं है? वो बच्चा जब तक सालिम बुद्धि न बने तब तक बाप समान स्टेज थोड़े ही कही जाएगी। ये दस जनरेशन हो गई। एक जनरेशन से दूसरी जनरेशन में फर्क होगा या नहीं होगा? और थोड़ा फर्क होगा या बड़ा फर्क होगा? बड़ा फर्क हो जाता है। कहाँ सूर्यवंशी बनी, कहाँ चंद्रवंश, कहाँ ईस्लाम वंश, फिर कहाँ बौद्धी वंश, फिर कहाँ क्रिश्चियन वंश। एक दूसरे से उतरती कला वाले होते जोते हैं। जैसे नौ रत्न। नौ रत्नों में कहाँ हीरा और कहाँ पन्ना, मोती, मूंग
ा, माणिक्य। उनकी कीमत में तो बहुत अंतर होता है। ऐसे ही राम और कृष्ण में भी अंतर है। उनके 84 जन्मों की प्राप्ति में भी अंतर है।
Time: 36.28
Student: Ram and Krishna are companions of many births. Even then, why is the soul of Krishna unable to recognize (the Father)?
Baba: Why is it not able to recognize? It is because there is a connection of the father and son. A father is the creator and a child is a creation. A child will have a child-like intellect. And what about the father? The father will have a mature intellect. So, isn't there a difference (between them)? Until that child becomes of mature intellect, he cannot be said to have a stage equal to that of the father. These are ten generations. Will there be a difference between one generation and the other or not? And will there be a little difference or a big difference? There is a big difference. Can there be a comparison between the *Suryavanshis* (those belonging to the Sun dynasty), the *Chandravanshis* (those of the Moon dynasty), the Islam *Vanshis* (those of the Islam dynasty), the Buddhists and those of the Christian dynasty? They have decreasing celestial degrees when compare to each other. Like the nine gems. Among the nine gems, can there be a comparison between the diamond *(heera)*, emerald (*panna*), pearl *(moti)*, coral (*moonga*), ruby (*maanikya*)? There is a huge difference between their costs. Similarly there is a difference between Ram and Krishna too. There is a difference in their attainments of 84 births as well.

समय – 40.09
जिज्ञासू – बाबा, लक्ष्मी–नारायण दोनों में से किसका मर्तबा बड़ा है?
बाबा– गायन के रूप में जब कहा जाता है, बोलने के आधार पर, तो लक्ष्मी का मर्तबा आगे है। और नारायण पीछे है। क्यों? लक्ष्मी का नाम इसलिए आगे है कि बिना उसके नारायण भी सम्पन्न नहीं बन सकता क्योंकि सम्पन्न पुरूषार्थ के लिए, सम्पन्न स्टेज की राजयोग की अवस्था पाने के लिए, प्रवृत्ति का होना ज़रूरी है। और प्रवृत्ति भी समान की होनी चाहिए या असमान की होनी चाहिए? जैसे शादी होती है, तो एक दूसरे का मेल मिलाते हैं कि नहीं? क्या मेल मिलाते हैं? शरीर से भी एक जैसे हो। एक बहुत मोटा हो और एक बहुत पतला, छोटा हो, बंटा हो। तो प्रवृत्ति चलेगी इतने दिन? बहुत दिन प्रवृत्ति नहीं चलेगी, फेल हो जाएगी। एक बहुत रईस हो, साहूकार हो घर का और एक बिल्कुल गरीब हो, बैगर हो। तो उनकी प्रवृत्ति बना दी जाए तो चलेगी? नहीं चलेगी। तो ऐसे ही ये ईश्वरीय रास्ते

में भी जो समान पुरूषार्थी आत्माओं का जब मेल होता है पुरूषार्थ के रास्ते में तो फिर विजयी बन जाते हैं। अब वो मेल वायब्रेशन के आधार पर हो जाए, दृष्टि के आधार पर हो जाए, कर्मेन्द्रियों के आधार पर हो जाए, वाचा के आधार पर हो जाए। वो एक अलग बात।
Time: 40.09
Student: Baba, between Lakshmi and Narayan, whose position is higher?
Baba: When the name is praised, when it is uttered, Lakshmi's position is ahead and Narayan comes after her. Why? Lakshmi's name is uttered first because without her Narayan cannot become perfect either because household is necessary to make perfect special effort for the soul *(purusharth)*, to achieve the perfect stage of *Rajyog*. Moreover, should a household be of the equal ones or of the unequal ones? For example, when marriage takes place, do they make match of one another (the boy and the girl) or not? How do they match? They should also be similar physically. If one is very fat and the other is very thin, dwarf, will the household work out for many days? The household will not work for many days. It will fail. If one is very rich, belongs to a prosperous family and the other is very poor, a beggar, and if their household (marraige) is arranged, then will it work? It will not. So, similarly, even in this path of God, when equal purusharthi (makers of special effort for the soul) souls meet on the path of making special efforts for the soul, they become victorious. Well that match/meeting could be on the basis of vibrations, on the basis of vision, on the basis of organs of action, on the basis of speech. That is a different issue.

समय – 42.09
जिज्ञासू – शूटिंग वक्त है ना अभी बाबा। तो शूटिंग पीरियड में भी सतयुगी शूटिंग में सतोप्रधान और सतोप्रधान में ब्रह्मा–सरस्वती की बातें क्यों बताते हैं? इसका मतलब क्या?
बाबा – ब्रह्मा कितने हैं? और उनकी सरस्वतियाँ कितनी हैं? जैसे ब्रह्मा चार–पांच है। तो उनकी सहयोगिनी शक्तियाँ भी अलग–अलग हैं। इसलिए बताते हैं।
Time: 42.09
Student: Baba, now the shooting period is going on, isn't it? So, even in the shooting period, during the *satopradhan* (consisting mainly in the quality of goodness and purity) shooting of the Golden Age why are the issues related to Brahma-Saraswati mentioned? What is its meaning?
Baba: How many Brahmas are there? And how many Saraswatis are there? Just as there are four-five Brahmas, their helper *shaktis* are also different. That is why they are mentioned.

समय – 42.38
जिज्ञासू – सतयुग के आदि में 9 लाख 16 हजार 108 बताई जाती है संख्या.....
बाबा – सतयुग आदि में नहीं। सतयुग के पहले जन्म में।
जिज्ञासू – और अंत में 2 करोड़ बताया है।
बाबा – हाँ, सतयुग के अंतिम जन्म में आखिर में माना त्रेता के आदि में। त्रेता के आदि का जो जन्म है और सतयुग का अंतिम जन्म आँठवा जन्म है, उसके अंत में दो करोड़ आबादी।
Time: 42.38
Student: In the beginning of the Golden Age, the population has been mentioned to be 9 lakhb16 thousand 108.....
Baba: Not in the beginning of the Golden Age. In the first birth of the Golden Age.
Student: And in the end (of the Golden Age) it has been said to be 2 crores (20 million).
Baba: Yes, in the last birth of the Golden Age, in the end, i.e. in the beginning of the Silver Age; the birth in the beginning of the Silver Age and the last birth in the Golden Age is the eighth birth. At its end, the population is two crores.

जिज्ञासू – त्रेतायुग के आदि में कितनी जनसंख्या होती है?
बाबा – 10 करोड़। ज्यादा से ज्यादा 10 करोड़, एक्युरेट नहीं बताई। 2 करोड़ से 10 करोड़। कितने गुनी बढ़ गई? पांच गुनी बढ़ गई। त्रेता में ही पांच गुनी बढ़ गई। तो द्वापर युग में और कई गुनी बढ़ेगी या कम बढ़ेगी? बढ़ोतरी का जो अनुपात है वो ज्यादा ही हो जाएगा। और फिर कलियुग में? कलियुग में तो और ज्यादा। सन् 47 में ही भारतवर्ष की आबादी थी 40 करोड़। और अब सन् 47 की जगह कितना हो गया? 60 साल हुआ ना। वो 60 साल में कितनी आबादी हो गई?
जिज्ञासू – 120 करोड़।
बाबा – फिर। 120 माना तीन गुनी बढ़ गई 60 साल में ही। तो दुनियाँ की भी बढ़ गई होगी तीन गुनी।
जिज्ञासू –त्रेता के अंत तक 10 करोड़।
बाबा – त्रेता के अंत तक लगभग 10 करोड़।
Student: What is the population in the beginning of the Silver Age?
Baba: 10 crores (100 million). At the most 10 crores. It has not been mentioned accurately. From 2 crores to 10 crores, how many times did it increase? It increased five times. In the Silver Age alone, it increased five times. So, in the Copper Age, will it increase many times more or will it increase to a lesser extent? The proportion of increase will certainly become more. And what about that in the Iron Age? In the Iron Age it will be even more. In the year (19)47 only the population of India was 40 crores (400 million). And now, when compared to the year (19)47, how much time has passed? 60 years have passed, isn't it? Which figure has the population reached in the 60 years?
Student: 120 crores (1.2 billion).
Baba: Then? 120 means, it has increased three times in just 60 years. So, the population of the world must also have increased three times.
Student: 10 crores till the end of the Silver Age.
Baba: Approximately 10 crores till the end of the Silver Age.

जिज्ञासू – 33 करोड़ देवताओं का गायन कैसे है?
बाबा – वो तो हर धर्म की आत्मायें अंत तक उतरती रहती हैं। ऐसे नहीं कि द्वापरयुग में जो देवी देवता सनातन धर्म की आत्मायें आना बंद हो जाती है। नहीं। वो भी उतर रही हैं। हर धर्म की आत्मायें अंत तक चलती हैं। बीच में कोई खलास होने वाले नहीं है।
जिज्ञासू – त्रेता युग के अंत में अर्ध विनाश होता है ना।
बाबा – त्रेता के अंत में आधा विनाश होता है। कलियुग के अंत में पूरा विनाश होता है। जैसे द्वापर युगी शूटिंग 98 के आसपास आधा विनाश हुआ ब्राह्मणों की दुनियाँ में या पूरा विनाश हुआ? आधा विनाश हुआ।
Student: How is there the glory of 33 crore (330 million) deities?
Baba: As regards that, souls of every religion keep descending (from the soul world) till the end. It is not that the souls belonging to the Ancient Deity religion *(Devi Devta Sanatan dharm)* stop coming in the Copper Age. No. They are also descending. Souls of every religion continue (to descend) till the end. The series doesn't finish in between.
Student: Semi-destruction takes place in the end of the Silver Age, does it not?
Baba: Semi-destruction takes place in the end of the Silver Age. Complete destruction takes place in the end of the Iron Age. For example, did semi-destruction take place in the world of Brahmins around 98 during the Copper Age shooting or did complete destruction take place? Semi-destruction took place.

समय – 45.58
जिज्ञासू– बाबा, आज समाज में जो बुद्धिवादी वर्ग है। वो श्रेष्ठ पद पर है।
बाबा – हं?
जिज्ञासू – ऊँचे पद पर विराजमान है।
बाबा – आज की दुनियाँ में।
जिज्ञासू – जबकि वो बाप को पहचानते भी नहीं है। जब हम संदेश देने जाते हैं तो मानते नहीं। और पहचानते भी नहीं। फिर उन्होंने ऐसा कौनसा श्रेष्ठ कर्म किया है?
बाबा – तो वो सृष्टि के अंत में है या बीच में है या शुरूवात में है? ऊँच पद उनको जो सृष्टि का चक्र है, जो ड्युरेशन है, उस ड्युरेशन के मध्य में उनको ऊँच पद मिलता है या आदि में ऊँच पद मिलता है, या बिल्कुल अंत में उनको ऊँच पद मिलता है? कब मिलता है?
जिज्ञासू– अंत में।
बाबा – तो आप अंत में लेने के लिए तैयार है।
जिज्ञासू – नहीं ऐसे नहीं, संदेश देने के लिए।
Time: 45.58
Student: Baba, today the intellectual section of the society is holding higher positions.
Baba: Hum?
Student: They are holding high positions.
Baba: In today's world.
Student: Whereas, they don't even recognise the Father. When we go to give message, they do not accept the Father and do not even recognize Him either. Then what great actions have they performed (which made them attain such high positions)?
Baba: So, is it in the end of the world (cycle) or in the middle or in the beginning? Do they attain high position in the middle of the duration of the world cycle or in the beginning or do they receive the high post in the complete end? When do they attain it?
Student: In the end.
Baba: So, are you ready to take it in the end?
Student: No, it is not so; in order to give message.

बाबा – बाताया कि उन्होंने अंत में जाकरके बाप को पहचाना होगा। क्या? जब बाप प्रत्यक्ष होने पर आ गया होगा। कोर्ट, कचहरियों में, सुप्रीम कोर्ट में बात पहुँच गई होगी। तब जाकरके अखबारों में निकलेगा, टी.वी. में निकलेगा। तब पहचानेंगे। तो थोड़े समय के लिए पहचानेंगे तो उनको थोड़े समय के लिए प्रारब्ध बनेगी या लम्बे समय की प्रारब्ध बनेगी? कैसी बनेगी? अरे! ये बात नहीं समझ में आ रही है?
जिज्ञासू – समझ में आ रही है लेकिन.....
Baba: It has been said that they would have recognized the Father in the end. What? When the time for the Father's revelation would have approached, when the issue would have reached the courts and the Supreme Court, then it will be published in the newspapers, transmitted through TV, then they will recognize. So, if they recognize for a short time, will they attain the fruits for a short period or will they attain fruits for a longer period? How will it be? Arey, are you not understanding this?
Student: I am understanding but.....

बाबा – वो अभी की बात नहीं है। वो अभी जो बैठे हुए हैं वो उनका लम्बे समय का ड्युरेशन है। यहाँ का थोड़े समय का पुरूषार्थ वहां का लम्बे समय का पुरूषार्थ बन जाता है। तो मान लो 2018 में प्रत्यक्षता नूंधी हुई है। तो 2018 में जो आत्मायें संदेश लेंगी और त्रीव गति से पुरूषार्थ करेंगी क्योंकि सतोप्रधान होती हैं उस समय, तो उस समय थोड़े समय का उनका पुरूषार्थ जो है वो इस समय 4–5 वर्ष के लिए राजाई देने के निमित्त बन जाता है। उनकी राजाई में और देवता धर्म की जो 84 जन्म लेने वाली आत्मायें हैं जो उनकी

राजाई में तो बहुत अंतर है। वो जन्म–जन्मांतर की प्राप्ति करने वाले हैं। और वो सिर्फ अंतिम जन्म में, ये चार–पांच वर्ष के लिए, 6–8 वर्ष के लिए राजा बनते हैं। प्रजातन्त्र सरकार में सबसे लम्बे समय तक राजाई करने वाली कौनसी आत्मा हुई?
जिज्ञासू – नेहरू।
Baba: It is not a case of the present time. It is a long duration for those who are sitting now (in high positions). Short-term special effort for the soul *(purusharth)* done here becomes long-term *purusharth* for there. So, suppose the revelation is fixed for 2018. So, the souls who will take the message in 2018 and will do *purusharth* with a fast speed because they will be *satopradhan* (consisting mainly in the quality of goodness and purity) at that time. So, their short-term *purusharth* made at that time becomes instrumental in giving them the kingship for 4-5 years at present. There is a big difference between their kingship and the kingship of the souls belonging to the Deity religion, who take 84 births. They achieve attainments for many births and they (those at high posts at present) become kings for 4-5 years, or 6-8 years in the last birth. Which soul ruled for the longest period in democratic government (*prajatantra sarkaar*)?
Student: Nehru.

बाबा– नेहरू। बाकी तो सब उसके मुकाबले कम समय तक राजाई करने वाले हैं। ऐसे ही बेहद के नेहरू से टैली कर दो। जो बेहद का नेहरू है वो सारा 5000 वर्ष का जो ड्युरेशन है, उसमें ज्यादा से ज्यादा लम्बे समय तक राजाई प्राप्त करने वाली आत्मा साबित हो जाती है। जैसे गांधी के जीवन में लागू हुआ। कितनी मेहनत की। रामराज्य लोंयेंगे–2। लेकिन रामराज्य तो आया भी नहीं और कुछ उसमें हिस्सा ले भी नहीं सके। सन् 47 में ही स्थापना हुई स्वंतत्रता संग्राम की पूर्ति हुई और सन् 47 में ही चल बसे। प्राप्ति कुछ भी नहीं हुई। ऐसे ही यहाँ कृष्ण की आत्मा के लिए भी लागू होता है। ऐसे ही सभी धर्म पिताओं और उनके फॉलोवर्स के लिए भी लागू होता है।
Baba: Nehru. When compared to him, all the others ruled for a lesser period. Similarly, you can tally it with Nehru in an unlimited sense. Nehru in an unlimited sense proves to be the soul who achieves kingship for a longer period in the entire duration of 5000 years. Just as it was applied in the life of Gandhi. He worked so hard (thinking) we shall bring the kingdom of Ram *(Ramrajya)*; we shall bring the kingdom of Ram. But neither did the kingdom of Ram arrive nor was he able to take (enjoy) some portion of it. Establishment (of a free India) took place in the year 19(47); the freedom struggle ended and that soul died in the year (19)47 itself. He did not achieve anything. Similarly, it is applicable here to the soul of Krishna as well. Similarly, it applies to all the religious fathers and their followers too.

जिज्ञासू – बाबा, नाथूराम गोडसे ने उनको गोली मारी, गांधीजी को। तो नाथूराम गोडसे का बेहद में अर्थ क्या है?
बाबा – 'ना' माना नहीं और 'थू' माना? थूकना। नाथू राम; लेकिन ऐसा था जैसे गॉड सा। जो गांधी जी के ऊपर भी चढ़ाई कर दे। गांधी माना कृष्ण की सोल। कृष्ण की सोल को भी जो दबा दे और ऊँचा बैठ जाए तो क्या साबित हुआ? जैसे भगवान हो गया। तो वो नाथूराम गोडसे नाम था। इतनी महान आत्मा को भी उसने गोली मार दी। कोई पोईन्ट को लेकरके मारी होगी या फिर ऐसे ही मार देगा? कोई कमजोरी वाली बात देखी होगी तो गोली मार दी। और दुनियाँ का बड़े ते बड़ा गुरू कौन है? इस दुनियाँ में` देहधारी मनुष्य गुरु इतने है ढेर के ढेर। उनमें बड़े ते बड़ा गुरू कौन है?
जिज्ञासू – शिवबाबा।
बाबा– शिवबाबा? देहधारी गुरू है? यहाँ तो देहधारी गुरू की बात कर रहे हैं। देहअभिमानी गुरूओं की बात कर रहे हैं कि देहअभिमानी गुरू हैं दुनियाँ में। उनमें सबसे बड़े ते बड़ा देहअभिमानी गुरू कौन है?

जिज्ञासू – ब्रह्मा।
Student: Baba, Nathuram Godse fired a bullet at him i.e. Gandhiji. So, what is meant by Nathuram Godse in an unlimited sense?
Baba: *'Na'* means no and what is meant by '*thu'*? *Thukna* (to spit). Nathu Ram; but he was 'god *sa*' (like god), who could attack even Gandhiji. Gandhi means the soul of Krishna. The one who could supress even the soul of Krishna and sit on a high position, what does it prove? (It proves that) He is like God. So, his name was Nathuram Godse. He fired a bullet at even at such a great soul. Would he have shot him with the help of some point (i.e. issue) or will he simply shoot him? He must have seen some point of weakness in him so, he shot him. And who is the biggest *guru* in the world? There are so many bodily *gurus* in this world. Among them, who is the biggest *guru*?
Student: Shivbaba.
Baba: Shivbaba? Is he a bodily *guru*? Here, we are talking about the bodily *guru*. We are talking about the body conscious *gurus* that there are body conscious *gurus* in the world. Among them who is the most body conscious *guru*?
Student: Brahma.

बाबा – देखो ये लोग बहुत गलत बोल रहे हैं। ध्यान देना। तो जैसे वो ब्राह्मणों की संगमयुगी दुनियाँ का गांधी है। कौन? ब्रह्मा बाबा। ऐसे ही वो हद की दुनियाँ का गांधी है। हद की दुनियाँ के गांधी को हद के नाथुराम गोडसे ने गोली मारी। और बाबा भी मुरली में बोलते हैं, इन गुरूओं को मारो गोली। तो जो बेहद का नाथुराम गोडसे है उसने..... उतरते समय उनको गोली मारी थी। सीढ़ियों से उतर रहे थे तब गोली मारी या चढ़ते समय गोली मारी? उतरते समय गोली मार दी। उस गांधी के लिए भी बोला है। गांधी मरा; राजकोट में जाकर कोई बड़े साहूकार के यहाँ जन्म लिया। तो इसका बेहद का अर्थ क्या हुआ? जो बेहद का गांधी ब्रह्मा वाली आत्मा है। वो शरीर छोड़ती है। कहाँ जन्म लिया? जो राजाओं का कोट है। कोट माना किला। क्या? जो राजाओं का एडवान्स पार्टी में कोट माना किला है, राजाओं को किला तैयार हो रहा है, संगठन तैयार हो रहा है; उस संगठन में कोई बहुत ज्ञान रत्नों का साहूकार कांग्रेसी है। उसकी बुद्धि रूपी टोकरी में घुस जाती है। वहाँ जन्म ले लेती है, प्रत्यक्ष हो जाती है। जन्म लेना माना प्रत्यक्ष होना।
Baba: Look, these people are speaking wrong. Pay attention. So, he is like the Gandhi of the Confluence-age world of Brahmins. Who? Brahma Baba. Similarly, he (i.e. M.K.Gandhi) is the Gandhi of the limited world. Nathuram Godse in a limited sense shot at Gandhi of the limited world. And Baba also says in the *murli*, you should fire bullets at these *gurus*. So, the Nathuram Godse in an unlimited sense..... did he shoot him while descending, had did he fire the shot when he was walking down the staircase or when he was climbing the staircase? He fired the shot when he was descending. It has also been said for that Gandhi. Gandhi died and took birth at the home of a very rich person of *Rajkot* (a place in Rajasthan in India). So, what does it mean in an unlimited sense? When the Gandhi in an unlimited sense, i.e. the soul of Brahma leaves the body, where does it take birth? The *kot* of kings (*raja*); *kot* means fort. What? The *kot* i.e. the fort of the kings of the advance party; a fort of kings is being built. A gathering is becoming ready. In that gathering there is a Congressman who is very rich in gems of knowledge. It (i.e. the soul of Gandhi in an unlimited sense) enters his basket-like intellect. It takes birth there; it is revealed. Taking birth means being revealed.

समय – 52.48
जिज्ञासू– बाबा, महाभारत में भीष्म को बाणों की शैया पर दिखाया है। सीढ़ी के चित्र में राम वाली आत्मा को काटों की शैया पर दिखाया है। और क्राईस्ट को सूली पर चढ़ाया गया। इसकी शूटिंग यहाँ कैसे होती है?
बाबा – राम वाली आत्मा की तो बात ही छोड़ दो। उसके लिए तो बोला है। ऐसी कोई बात नहीं दुनिया की जो तेरे उपर लागू न होती हो। क्या? वो तो बात छोड़ो। लेकिन जो भीष्म पितामाह पार्ट दिखाया है। वो प्रवृत्ति मार्ग का पार्ट है या निवृत्ति मार्ग का पार्ट है? निवृत्ति मार्ग का पार्ट है। माना निवृत्ति मार्ग का पार्ट बजाने वाली आत्माओं में कोई ऐसी सशक्त आत्मा है जो बहुत पावरफुल है। लेकिन इतनी पावरफुल होते हुए भी वो सहयोग किसका देती है? जो देहअभिमानी हाथियों के पुर में रहने वाले हैं उनका सहयोग देती है। क्या? इन्द्रप्रस्थ में रहने वालों का सहयोग नहीं देती है। माना पापाचारियों के सहयोगी बनते हैं। जो पुण्य आत्मायें पाण्डव हैं उनके सहयोगी नहीं बनते हैं। तो बीजरूप आत्माओं में प्रत्यक्ष होंगे। टाईम आ रहा है।

Time: 52.48
Student: Baba, *Bheeshma* (a character in the epic Mahabharat) has been shown to be lying on a bed of arrows in Mahabharata. In the picture of the Ladder, the soul of Ram has been shown to be lying on a bed of thorns. And Christ was crucified. How does its shooting takes place here?
Baba: Leave aside the issue of the soul of Ram. About him it has been said that there is nothing in the world that is not applicable to him. What? Leave aside that topic. But the part of *Bheeshma Pitaamah* that has been depicted, does it belong to the path of household *(pravritti marg)* or to the path of renunciation *(nivritti mag)*? It is a part of the path of renunciation. It means that there is a powerful soul among the souls who play the part of the path of renunciation, but despite being so powerful, whom does it help? It helps those who live in the abode of the body conscious elephants *(haathi)*. What? It does not help those who live in *Indraprasth* (the capital of Pandavas). It means that he beomes the helper of the sinful ones. He does not become the helper the noble souls *(punyatma)*, i.e. the Pandavas. So, he will be revealed amongst the seed-form souls. The time is coming.

……
Note: The words in italics are Hindi words. Some words have been added in the brackets by the translator for better understanding of the translation.